VII

UNIVERSITY GRANTS COMMISSION
BAHADUR SHAH ZAFAR MARG
NEW DELHI-110002

MINOR RESARCH PROJECT
(2015 To 2017)

THE FINAL REPORT OF THE WORK DONE ON THE PROJECT

1.	Title of the Research Project	**: Dr. Suryanarayan Ransubhe Ke Dwara Anudit Atmkathatmak – Krutiyaon Ka Anuwad parak Yavam Smikshatmak Adyayan. "**
2.	Name Of The Principal Investigator	**: Mr. Ekile N. B.**
3.	Name And Address Of The Institution	**: Department of Hindi, Shivraj College of Arts, Commerce and D. S. Kadam Science College, Gadhinglaj, Dist- Kolhapur, 416502**
4.	Ugc Approval No. And Date	**: FILE NO.23-1118/14(WRO) Dated on 20/02/2015**
5.	Date Of Implementation	**: 05/05/2015**
6.	Tenure Of The Project	**: 2 Years (05 /05/2015 to 31/05/2017)**
7.	Total of grant allocated	**: 2,50,000/**
8.	Total grant received	**: 2,00,000/-**
9.	Final Expenditure	: **2,51,727/-**

Final Project Report Of Work Done : -

प्रस्तुत लघु–शोध प्रबंध को मैंने चार अध्यायों मे विभाजित किया है। शोध प्रबंध के अंत में उपसंहार दिया है।

प्रथम अध्याय : ' अनुवाद के सैद्धांतिक पक्ष का विवेचन '

प्रस्तुत अध्याय में अनुवाद के सैद्धांतिक पक्ष का विवेचन किया हे। मैं साहित्य का विद्यार्थी होने के कारण साहित्य को पढ़ और समझने में मुझे विशेष कठिनाई नहीं उठानी

पड़ती। किंतु अनुवाद मेरे लिए समझ के बाहर का विषय था। इसलिए अनुवाद के स्वरूप को जानने के लिए मैंने प्रथम अध्याय में अनुवाद के सैद्धांतिक पक्ष का सामान्य परिचय दिया है। इसके अंतर्गत अनुवाद का स्वरूप एवं अर्थ, परिभाषा, अनुवाद की प्रक्रिया, अनुवाद का महत्व एवं व्याप्ति, अनुवाद समीक्षा आदि का विवरण प्रस्तुत करने का प्रयास इस अध्याय में किया है।

द्वितीय अध्याय :डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे का व्यकित्व एवं कृतित्व'

प्रस्तुत अध्याय में प्रतिभासंपन्न तथा एक सफल अनुवादक डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे जी के व्यक्तित्व की विभिन्न पहलुओं तथा उनके कृतित्व का संक्षेप में विवेचन प्रस्तुत अध्याय में किया है।

तृतीय अध्याय : ' डॉ.सूर्यनारायण रणसुभे के द्वारा अनूदित आत्मकथात्मक कृतियों का अर्थगत समतुल्यता का विश्लेषण '

प्रस्तुत अध्याय में डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे के द्वारा अनूदित आत्मकथात्मक कृतियों के अर्थ पक्ष के समतुल्यता का अध्ययन किया है। इसके अंतर्गत वाक्य– स्तरीय, सांस्कृतिक, प्राकृतिक, भौगोलिक एवं पौराणिक संदर्भगत समतुल्यता तथा अर्थगत भिन्नता की महत्वपूर्ण स्थितियों में अर्थ–विस्तार, अर्थ– संकोच तथा अर्थांतरण आदि का अनुवादपरक एवं समीक्षात्मक विवेचन किया है।

चतुर्थ अध्याय : 'डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे के द्वारा अनूदित आत्मकथात्मक कृतियों का अभिव्यक्तिगत समतुल्यता का विश्लेषण '

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत भाषागत, भावगत, उद्देश्यगत तथा शैलीगत समतुल्यता आदि का अनुवादपरक एवं समीक्षात्मक अध्ययन किया है।

उपसंहार के अंतर्गत पुर्ववर्ती अध्यायों के परिप्रेक्ष्य में शोधकार्य की उपलब्धियों तथा निष्कर्षात्मक बिंदुओ पर संक्षिप्त रूप से प्रकाश डाला गया है।

Objectives of the project:

1. अनुवाद के सैद्धांतिक पक्ष के विभिन्न पहलुओं का विवेचन किया है।

2. डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का विवेचन किया है।
3. मराठी से हिंदी में अनुदित दलित आत्मकथाओं के स्वरूप पर प्रकाश डाला है।
4. डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे के द्वारा मराठी से हिंदी में अनूदित दलित आत्मकथाओं के अंर्थगत समतुल्यता के स्वरूप का विवेचन किया है।
5. डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे के द्वारा मराठी से हिंदी में अनूदित दलित आत्मकथाओं के अभिव्यक्तिगत समतुल्यता के स्वरूप का विवेचन किया है।
6. डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे के द्वारा मराठी से हिंदी में अनूदित दलित आत्मकथात्मक साहित्य का अनुवाद के स्तर पर उसकी सफलताओं एवं कमियों का विवेचन किया है।
7. अनुवाद की सृजनशीलता एवं योग्यता का विवेचन किया है।

Whether objectives were achieved:

अनूवाद के माध्यम से एक भाषा में अभिव्यक्त भाव, विचार, आशय, सांस्कृतिक वैशिष्टय और शैलीगत विशेषताएँ आदि को यथासम्भव सुरक्षित रखते हुए दूसरी भाषा में पहूँचाना ही अनुवाद है। अनुवाद की इसी प्रक्रिया को समझने के लिए अनुवाद के सैद्धांतिक पक्ष का अध्ययन करना नितांत आवश्यक है।

डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे एक बहुमुखी प्रतिभा संपन्न व्यक्ति हैं जो निम्नवर्गीय परिवार से संबंधित है तथा उनका जीवन बचपन से ही कष्टमय और संघर्षशील रहा है। रणसुभे जी एक सुप्रतिष्ठित अनुवादक, लेखक, समीक्षक तथा विचारक रहे हैं। प्रस्तुत प्रबंध में रणसुभे जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को उजागर किया है।

अनुवाद की दृष्टि से अर्थगत समतुल्यता अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्रस्तुत प्रबंध में मूल पाठ के वाक्य, संस्कृति, प्रकृति, भौगोलिकता तथा पौराणिक संदर्भ एवं अर्थगत भिन्नता की स्थितियों का अनुवाद करते समय अनुवादक को काफी हद् तक सफलता प्राप्त हुई है।

मूल पाठ की भाषा, भाव, उद्‌देश्य तथा शैलीगत समतुल्यता का अध्ययन करते समय अनुवादक डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे जी को व्यापक मात्रा में सफलता प्राप्त हुई है किंतु कुछ प्रसंगों का अनुवाद करते समय कठिनाई उत्पन्न हुई है और अनुवाद असमतुल्य हुआ है।

डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे के द्‌वारा अनूदित आत्मकथात्मक कृतियों का अनुवादपरक एवं समीक्षात्मक अध्ययन करते समय प्रमुखतः कुछ बाते सामने आती है जिसमें अनुवादक ने मूल पाठ का अनुवाद करते समय कुछ स्थानों पर अनूदित रचनाओं में अर्थ–विस्तार, अर्थ–संकोच तथा अर्थांतरण की स्थिति उत्पन्न हुई है। जिसके चलते अुनवाद में दोष की स्थिति उत्पन्न हुई है। साथ ही जहॉ पर मूल पाठ का अनुवाद करना कठिन हुआ है वहाँ पर अनुवादक ने अपनी सूझ–बूझ के साथ अनुवाद करने का प्रयास किया है। जिससे अनुवादक की सफलता एवं कमियों का दर्शन होता है।

प्रस्तुत आत्मकथाओं का अध्ययन करते समय यह बात ध्याने में आती है कि, अनुवादक ने अनूदित रचनाओं में किसी प्रकार का बिखराव, परिवर्तन, विश्रंखलता या अव्यवस्था नहीं कि है। उन्होंने अपनी सुविधा के अनुसार मूल आत्मकथाओं का अनुवाद करने का सफलतम्‌ प्रयास किया है। जिससे अनुवादक की सृजनशीलता एवं योग्यता का परिचय प्राप्त होता है।

Achievements from the project:

डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे ने अपनी सृजनशीलता के माध्यम से आठवणीचे पक्षी, अक्करमाशी और उचल्या का सफल एवं उत्कृष्ट अनुवाद किया है। डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे के द्‌वारा अनूदित तथा मूल आत्मकथाओं का अध्ययन करने के पश्चात ऐसा अनुभव हुआ कि शायद ही दुनिया में भारत एकमात्र ऐसा देश है जहाँ एक मनुष्य के स्पर्श से दुसरा मनुष्य अछुत हो जाता है। सवर्णवादी मानसिकता ने हमेशा ही दलितों का जातीय छूआछुत के आधार पर शोषण किया है। प्रस्तुत आत्मकथाओं में

सामाजिक एवं जातीगत अमानवीयता का चित्रण व्यापक मात्रा में किया है। तीनों आत्मकथाकार स्वयं अपनी आत्मकथाओं में कहते हैं कि हमने अपने जीवन में जो कुछ भोगा अनुभव किया है। उसे उसी रूप में अभिव्यक्त करने का प्रामाणिक एवं सफल प्रयत्न किया है।

आठवणीचे पक्षी, अक्करमाशी और उचल्या को पढ़ने के पश्चात ऐसा अनुभव होता है कि भारतीय गाँव सवर्णों के लिए स्वर्ग हो सकते हैं परंतु दलितों के लिए तो वे नरक से कम नही हैं। वर्तमान समय में दलितों को गाँव की परिधियों से बाहर कर दिया है। परिधि के अंदर का एक गाँव जिसमें सवर्ण रहते हैं और परिधि के बाहर का एक गाँव जिसमें अस्पृश्य रहते हैं। यह गाँव की रचनागत व्यवस्था असमानता को जन्म देनेवाली रही है।

प्रस्तुत आत्मकथाओं में ग्रामीण आंचलिक बोली भाषा का प्रयोग कलात्मक रूप में हुआ है। आत्मकथाओं में ऐसे अनेक प्रसंग है जहाँ पर आक्रोश तथा विरोध की स्थिति उत्पन्न हुई है। परंतु आत्मकथाकारों ने ऐसे प्रसंगों में आक्रमक भाषा का प्रयोग न करते हुए संयमी भाषा का प्रयोग करके अपनी भाषिक योग्यता तथा शालीनता का परिचय दिया है। जिसे प्रस्तुत शोध प्रबंध में उजागर किया है।

आठवणीचे पक्षी, अक्करमाशी और उचल्या का अनुवादपरक एवं समीक्षात्मक अध्ययन करने के बाद इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि मूल एवं अनूदित रचनाओं की वाक्य संरचना में काफी हद् तक समानता दिखाई देती है। स्रोतभाषा की वाक्य योजना का अनुवाद करते समय अनुवादक ने शब्द, अर्थ, वाक्यस्तर, वचन, लिंग, कारक, पद तथा पदबंध आदि की दृष्टि से समतुल्य अनुवाद करने का प्रयास किया है।

संक्षेप में कह सकते है कि अनुवाद में कुछ अधिक जोड़ने या कुछ घटाने की समस्या से बचकर डॉ. सूर्यनारायण रणसुभेजी ने दलित आत्मकथाओं का यथावत

अनुवाद करने का सफल प्रयास किया है। प्रस्तुत आत्मकथाओं में अनुवाद के द्वारा डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे जी ने अनुवाद का नया मानदंड स्थापित किया है।

Summary of the finding:

बीसवीं शताब्दी अंतरर्राष्ट्रीय संस्कृति की शताब्दी है। और इसी कारण इसे अनुवाद की शताब्दी भी कहा गया है संप्रेषण के नए–नए माध्यमों ने वसुधैव कुटुंबकम् की संकल्पना को साकार बना दिया है। प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में अनुवाद का स्वरूप एवं व्युत्पत्तिमूलक अर्थ तथा संस्कृत, हिंदी और पाश्चात्य विद्वानों की परिभाषाओं का विवेचन करते हुए अनुवाद के संबंध में अनेक विद्वानों के मतों को प्रस्तुत किया है। जिससे यह स्पष्ट होता है कि एक भाषा में अभिव्यक्त भाव, विचार, आशय, सांस्कृतिक वैशिष्टय और शैलीगत विशेषताएँ आदि को यथासम्भव सुरक्षित रखते हुए दूसरी भाषा में पहुँचाना ही अनुवाद है। अनुवाद प्रक्रिया के संदर्भ में अनेक भारतीय तथा पाश्चात्य विद्वानों ने अपने मतों को अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है। अनुवाद की आवश्यकता एवं महत्व आदि का भी विवेचन किया हैं कह सकते हैं कि वर्तमान युग को यदि अनुवाद का युग भी कहाँ जाएँ तो यह कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। आज विश्व की विभिन्न भाषाओं के साहित्य को समझने के लिए तथा नया–नया ज्ञान प्राप्त करने के लिए अनुवाद की आवश्यकता है। साथ ही अनुवद की उपयोगिता तथा अनुवाद समीक्षा का विवेचन किया है।

डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे के द्वारा चर्चित अनूदित दलित आत्मकथाओं को समझने के लिए डॉ. सूर्यनारयण रणसुभे जी के व्यक्तित्व को भी समझना आवश्यक था। क्योंकि साहित्यकार के व्यक्तित्व उसके समसामयिक परिस्थितियों, वातावरण का प्रभाव उसकी रचनाओं में प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप में विद्यमान रहता ही है। इसीलिए प्रस्तुत शोध प्रंबंध में अनुवादक डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का संक्षेप में विवेचन किया है। डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे एक बहुमुखी प्रतिभा संपन्न व्यक्ति हैं वे निम्नवर्गीय परिवार से संबंधित है तथा उनका जीवन बचपन से

ही कष्टमय और संघर्षशील रहा है। उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनिय कार्य किया है तथा वे हिंदी के सफल अध्यापक रहे हैं। स्पष्ट है कि डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे शिक्षा व्यवस्था से प्रत्यक्ष रूप से जुड़े हुए है।

मराठी तथा हिंदी अनूदित साहित्य में डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे का नाम आदर से लिया जाता है। डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे एक सुप्रतिष्ठित अनुवादक, लेखक समीक्षक, सहलेखक तथा विचारक रहे हैं। उन्होंने भारतीय संविधान के शिल्पकार बोधिसत्व डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर की जीवनी का लेखन किया है। इन सभी में उन्होंने अनुवाद के क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे ने अपने साहित्य और विचारों के माध्यम से एक शोषणमुक्त समाज के निर्माण की परिकल्पना की है। डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को देखने के पश्चात इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि अनुवादक ने सृजनात्मक एवं अनुवाद लेखन का स्तरीय कार्य किया है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध में 'डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे के द्वारा अनूदित आत्मकथात्मक कृतियों के अर्थगत समतुल्यता का विश्लेषणात्मक विवेचन' किया है। प्रस्तुत शोध प्रबंध में मूल एवं अनूदित आत्मकथाओं के वाक्यस्तरीय समतुल्यता का विवेचन किया है। जिसमें रचना के आधार पर तथा अर्थ के आधार पर वाक्य भेद को समतुल्यता की दृष्टि से परखने का प्रयास किया है। अनुवाद की दृष्टि से वाक्यस्तरीय समतुल्यता अत्यंत महत्वपूर्ण है। क्योंकि अनुवाद में एक भाषा की वाक्य संरचना को दूसरी भाषा की वाक्य सरंचना में रखना होता है। अनुवादक ने मूल आत्मकथाओं के बड़े–बड़े वाक्यों का अनुवाद लक्ष्यभाषा की प्रकृति के अनुरूप करते हुए कहीं–कहीं पर वाक्यों को छोटे–छोटे वाक्य के रूप में परिवर्तित कर दिया है। डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे ने मूल आत्मकथाओं के वाक्यों का अनुवाद करते समय शब्द, अर्थ, भाव और क्रम व्यवस्था का विशेष ध्यान रखा है।

भारत एक संस्कृतिप्रधान देश हैं। प्रत्येक समाज की अपनी एक अलग संस्कृति होती है, जिसमें उस समाज की सारी विशेषताएँ निहित होती है। विभिन्न जाति–धर्मों के तीज–त्यौहार भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग है। प्रस्तुत शोध प्रबंध में संस्कृति के विभिन्न पहलुओं का विवेचन किया है। जिसमें मोहर्रम, दशहरा, विवाह आदि जैसे सांस्कृतिक त्यौहार का विवेचन किया है। अंधश्रद्धात्मक संस्कृति, खंडोबा का यात्रा उत्सव पंढरपुर का यात्रा उत्सव, लक्ष्मी का यात्रा उत्सव एवं विभिन्न लोकगीतों का सहज एवं सुंदर विवेचन हुआ है। जो अनुवाद में आदर्शवत बन पड़ा है।

आठवणीचे पक्षी, अक्करमाशी और उचल्या में प्राकृतिक एवं भौगोलिक संदर्भ के अनुवाद में सजीवता एवं जीवंतता प्रतिस्थापित हुई है। जिसमें अनुवादक डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे ने प्राकृतिक एवं भौगोलिक विशेषताओं को प्रामाणिकता के साथ उद्घाटित करने का प्रयास किया है। प्रस्तुत आत्मकथाओं में गोरा कुम्हार, महाभारत कालिन पौराणिक संदर्भ के माध्यम से दलितों के अभावग्रस्त तथा अस्पृश्यता से युक्त जीवन की त्रासदी का विवेचन किया है। अनुवाद की प्रक्रिया बहुत जटिल होती है, इसीलिए मूलभाषा के पाठ्य सामग्री का अनुवाद लक्ष्यभाषा की पाठ्य सामग्री में करते समय अनुवादक को अर्थ–विस्तार, अर्थ–हानि और अर्थांतरण की जटिल प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है। और इसी प्रक्रिया के कारण अनुवाद कभी मूल से अधिक तो कभी मूल से कम तो कभी कथ्य में परिवर्तन हो जाता है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध में डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे के द्वारा अनूदित आत्मकथात्मक कृतियों का अभिव्यक्तिगत समतुल्यता का विश्लेषण किया है। प्रस्तुत शोध प्रबंध में मूल एवं अनूदित आत्मकथाओं के भाषागत समतुल्यता का विवेचन किया है। हम देख सकते हैं कि मूल आत्मकथाओं में लेखकों ने ग्रामीण आंचलिक विशुद्ध मराठी भाषा का प्रयोग किया है, जो मराठवाडा के लातुर जिले के आस–पास के परिवेश में बोली जाती है। और अनूदित आत्मकथाओं की भाषा में शुद्ध, मानक और परिष्कृत हिंदी भाषा का प्रयोग हुआ है। जिससे मूल तथा अनूदित आत्मकथाओं की भाषा में

असमतोलता की स्थिति उत्पन्न हुई है। मूल तथा अनूदित आत्मकथाओं की भाषा में स्थानीय रंग, पात्रानुकूलता, संप्रेक्षणियता, गाली–गलौज की प्रधानता, व्यंग्यात्मकता तथा भाषा की सहजता एवं सरलता आदि को देखा जा सकता है। मूल आत्मकथाकारों ने सजीव एवं यथार्थ स्थितियों को अभिव्यक्ति देने के लिए स्थानीय बोली का प्रयोग किया है तो अनुवादक ने मानक और परिष्कृत हिंदी भाषा का प्रयोग किया है। मुहावरे एवं कहावते बोलचाल की भाषा के बड़े सशक्त माध्यम हैं। प्रस्तुत शोध प्रबंध में मुहावरों एवं कहावतों का प्रयोग असरदार एवं प्रभावशाली बना हुआ है।

भाव मनुष्य के मस्तिष्क के विचारों को अभिव्यक्त करते हैं। भावात्मक स्थिति को उत्पन्न करने की प्रवृत्ति दलित आत्मकथाकारों की रचनाओं में अनेक स्थान पर दिखाई देती है। मूल एवं अनूदित आत्मकथाओं में श्रंगार भाव, वीर भाव, प्रेम, सौहार्द, घृणाभाव का चित्रण, गुलामी की दास्ता, निश्छल सेवाभाव की वृत्ति, दया, करुणा, सहानुभूति तथा भक्ति भाव आदि का सजीव एवं विस्तृत विवेचन हुआ है। प्र. ई. सोनकांबले, शरणकुमार लिंबाले और लक्ष्मण गायकवाड ने दलित जन–जीवन को अपने साहित्य के माध्यम से बड़ी ही सफलता के साथ अभिव्यक्त किया है। प्रस्तुत आत्मकथाओं के माध्यम से लेखकों ने दलितों की वेदना, अनाथ जीवन की त्रासदी, अक्करमाशी तथा उठाईगीर जीवन की वेदना, भूख, दरिद्रता, अस्पृश्यता, अन्याय, अत्याचार, शोषण तथा सामाजिक एवं जातिगत अमानवीयता आदि का चित्रण प्रामाणिकता के साथ किया है। दलित आत्मकथाकार अपनी आत्मकथाओं के माध्यम से पाठकों के सामने एक प्रश्न उपस्थित करते हैं कि देश को स्वतंत्रता मिली, शासन व्यवस्था बदली, कानुन बदले, संविधान बना, अधिकार मिले। इसके बावजूद भी शोषण, अपमान, अन्याय तथा जात्याभिशाप से ग्रस्त मानसिकता आज भी नष्ट होने का नाम नहीं ले रही है।

साथ ही मूल एवं अनूदित आत्मकथाओं में शैली वैविध्य को देखा जा सकता है। प्रस्तुत आत्मकथाओं में लेखकों ने तथा अनुवादक डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे ने विभिन्न शैलियों का प्रयोग किया है, जिसमें प्रमुख हैं निवेदन शैली, वर्णनात्मक शैली,

विश्लेषणात्मक शैली, संवादात्मक शैली तथा व्याख्यात्मक शैली आदि का चित्रण बड़ी रोचकता से किया है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि अनुवादक डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे जी के द्वारा मराठी से हिंदी में अनूदित दलित आत्मकथा यादों के पंछी, अक्करमाशी और उठाईगीर का अनुवाद न केवल कथ्य की दृष्टि से बल्कि शिल्प की दृष्टि से भी सफल अनुवाद है। अतः डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे जी ने अनुवाद साहित्य के क्षेत्र में स्तरीय कार्य किया है।

Contribution to the society:

भारत एक बहुभाषिक राष्ट्र है, जिसमें अनेक भाषाएँ बोली जाती है प्रत्येक भाषा साहित्य की दृष्टि से स्वयंपूर्ण एवं समृद्ध है। प्रत्येक भाषा के साहित्य में विविध अनुभूतियाँ तथा समृद्ध विचार है। अनुवाद इस प्रकार के साहित्य को एक भाषा से दूसरी भाषा में अनूदित करता है, जिससे मूल भाषा में अभिव्यक्त अनुभूतियों तथा विचारों से लक्ष्य भाषा के पाठक लाभान्वित होते है। ऐसा नहीं है कि एक भाषा से दूसरी भाषा में किए गए सभी अनुवाद सफल तथा स्तरीय होते हैं। कुछ अनुवादों में भाव, अर्थ, भाषा, शैली, व्याकरणिक संरचना के स्तर पर कुछ कमियाँ रह जाती है अनूदित आत्मकथाओं की सफलताओं एवं कमियों पर प्रकाश डालने हेतू अनुवादपरक एवं समीक्षात्मक अध्ययन की नितांत आवश्यकता है। ऐसी स्थिति में मैंने सफल अनुवाद का अध्ययन करने तथा सफल अनुवाद के मानंदडों को समझने के लिए इस विषय का चयन किया है। मराठी साहित्य के श्रेष्ठ रचनाकार प्र. ई. सोनकांबले, शरणकुमार लिंबाले और लक्ष्मण गायकवाड की कृमशः आठवणीचे पक्षी, अक्करमाशी और उचल्या इन तीनों दलित आत्मकथाओं का मराठी से हिंदी में अनूदित दलित साहित्य के श्रेष्ठ अनुवादक डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे जी के अनुवाद लेखन से यह समजा जा सकता है कि सफल अनुवाद अथवा प्रामाणिक अनुवाद क्या होता है। प्रस्तुत शोध प्रबंध में आठवणीचे पक्षी, अक्करमाशी और उचल्या के माध्यम से दलित समाज की वेदना,

अनाथ जीवन की त्रासदी, अक्करमाशी जीवन की पीड़ा, उठाईगीर जीवन की त्रासदी तथा दलित जीवन की भूख, दरिद्रता, अस्पृश्यता, शिक्षा में उत्पन्न होनेवाली कठिनाई आदि से पूरे समाज को परिचित करके समाज की मानसिकता में परिवर्तन लाने का कार्य किया है। साथ ही प्रस्तुत शोध प्रबंध अनुवाद जैसे विषयों पर शोध कार्य करनेवाले छात्रों के लिए संदर्भ ग्रंथ के रुप में कारगर साबित होगा।